SAMPLE CONTENT

PERFECT

हिंदी लोकभारती

बोर्ड की नई कृतिपत्रिका प्रारूप के अनुसार

चंद्रभूषण शुक्ल
B.M.M.- Journalism

कक्षा
दसवीं

Target Publications® Pvt. Ltd.

महाराष्ट्र राज्य माध्यमिक व उच्च माध्यमिक शिक्षण मंडळ, पुणे - ०४
द्वारा निर्धारित कृतिपत्रिका प्रारूप पर आधारित

PERFECT

हिंदी लोकभारती

दसवीं कक्षा

विशेषताएँ

- कृतिपत्रिका प्रारूप पर आधारित
- प्रत्येक पाठ का गद्यांश व पद्यांश में विभाजन
- विविध आकलन कृतियों का समावेश
- अधिकाधिक अभ्यास हेतु भाषा अध्ययन का प्रत्येक पाठ में समावेश
- विद्यार्थियों के मार्गदर्शन हेतु स्वतंत्र व्याकरण विभाग
- लेखन कौशल विकास हेतु उपयोजित लेखन का स्वतंत्र विभाग
- बोर्ड परीक्षाओं (मार्च २०१९, २०२०, २०२२, जुलाई २०१९, दिसंबर २०२०) में पूछी गई महत्त्वपूर्ण कृतियों का उत्तर सहित समावेश
- **Q. R. Code** के माध्यम से कविताओं के मार्गदर्शन हेतु वीडियोज उपलब्ध
- ज्ञानवर्धन व मनोरंजन हेतु 'आओ जानें' व 'खेल-खेल में' कृतियों का समावेश
- नमूना कृतिपत्रिका व मार्च 2023 की बोर्ड कृतिपत्रिका का समावेश (Q. R. Code के माध्यम से उत्तरपत्रिका)

Target Publications

Printed at: **Print to Print,** Mumbai

© *Target Publications Pvt. Ltd.*
No part of this book may be reproduced or transmitted in any form or by any means, C.D. ROM/Audio Video Cassettes or electronic, mechanical including photocopying; recording or by any information storage and retrieval system without permission in writing from the Publisher.

Balbharati Registration No.: 2018MH0022

TEID: 2517

P.O. No. 8700

प्रस्तावना

प्रिय विद्यार्थियो !

हम सहृदय दसवीं कक्षा में आपका अभिनंदन करते हैं। शैक्षणिक यात्रा के इस पड़ाव पर मानसिक चिंता व चिंतन दोनों का बढ़ना स्वाभाविक है। शिक्षा की पारंपरिक पद्धतियों में परिवर्तन कर उसे आधुनिक स्वरूप में ढालने व शिक्षा को व्यवहार जगत से जोड़ने के उद्देश्य से शिक्षण मंडळ ने इस पाठ्यक्रम का निर्माण किया है। शिक्षण मंडळ के उठाए गए इस कदम से ज्ञान के रूप में विविधता आने के साथ ही विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास निश्चित है। बोर्ड कृतिपत्रिका प्रारूप को आधार बनाकर **टार्गेट पब्लिकेशंस** द्वारा **Perfect हिंदी लोकभारती : दसवीं कक्षा** की मार्गदर्शक पुस्तिका का निर्माण किया गया है। यह पुस्तिका पाठ्यक्रम को सरल, सुगम एवं रुचिकर बनाने के साथ ही विद्यार्थी एवं पाठ्यक्रम के बीच सेतु का कार्य करेगी।

विद्यार्थियों में भाषिक क्षमता प्रबल करने अर्थात श्रवण, भाषण, वाचन एवं लेखन में उन्हें दक्ष बनाने के साथ ही उनकी कल्पनात्मक व वैचारिक शक्ति को और अधिक विकसित करने के उद्देश्य से इस पुस्तिका का निर्माण किया गया है। पुस्तिका की विविध विशेषताओं की विवेचना आगे के पृष्ठ पर विस्तारपूर्वक की गई है। हमें आशा और विश्वास है कि यह पुस्तिका विद्यार्थियों एवं शिक्षकों के लिए उपयोगी व ज्ञानवर्धक सिद्ध होगी और उनका सही दिशा में मार्गदर्शन करेगी।

उज्ज्वल भविष्य की ढेरों शुभकामनाएँ !

प्रकाशक

संस्करण : तृतीय

पुस्तिका की उत्कृष्टता बढ़ाने के लिए आपके अमूल्य सुझाव आमंत्रित हैं। हमारा ई-मेल है : mail@targetpublications.org

Target Publications

Disclaimer

This reference book is transformative work based on 'हिंदी लोकभारती ; प्रथमावृत्ति ; चौथा पुनर्मुद्रण-२०२२' published by the Maharashtra State Bureau of Textbook Production and Curriculum Research, Pune. We the publishers are making this reference book which constitutes as fair use of textual contents which are transformed by adding and elaborating, with a view to simplify the same to enable the students to understand, memorize and reproduce the same in examinations.

This work is purely inspired upon the course work as prescribed by the Maharashtra State Bureau of Textbook Production and Curriculum Research, Pune. Every care has been taken in the publication of this reference book by the Authors while creating the contents. The Authors and the Publishers shall not be responsible for any loss or damages caused to any person on account of errors or omissions which might have crept in or disagreement of any third party on the point of view expressed in the reference book.

© reserved with the Publisher for all the contents created by our Authors.

No copyright is claimed in the textual contents which are presented as part of fair dealing with a view to provide best supplementary study material for the benefit of students.

विशेषताएँ

कृतिपत्रिका प्रारूप : विद्यार्थियों के मार्गदर्शन हेतु कृतिपत्रिका प्रारूप का समावेश किया गया है।

लोकभारती कुल अंक विभाजन : लोकभारती के कुल अंकों के विभाजन का सविस्तार वर्णन यहाँ किया गया है।

शब्दार्थ / मुहावरे / कहावतें : पाठ में आए कठिन शब्दों के सरल हिंदी व अंग्रेजी अर्थ दिए गए हैं। इसके साथ ही पाठ में आए मुहावरे व कहावतें अर्थ सहित दिए गए हैं।

भावार्थ / सरल अर्थ : कविताओं को सरलता से समझने के लिए उनके सरल अर्थ दिए गए हैं। इसके साथ ही Q. R. Code के माध्यम से भावार्थ पर आधारित वीडियोज भी दिए गए हैं।

पाठ का गद्यांश / पद्यांश में विभाजन : नई कृतिपत्रिका प्रारूप के अनुसार प्रत्येक पाठ का गद्यांश / पद्यांश में विभाजन किया गया है।

पाठ पर आधारित कृतियाँ : संपूर्ण पाठ पर आधारित कृतियों को इस विशेष विभाग में समाहित किया गया है।

पाठ पर आधारित व्याकरण : प्रत्येक गद्य व पद्य में व्याकरण के विभिन्न घटकों का अभ्यास इस विभाग में समाहित किया गया है।

भाषिक कौशल : पाठ्यपुस्तक में दी गई श्रवणीय, संभाषणीय, पठनीय, लेखनीय आदि कृतियों में से आवश्यकतानुसार कुछ कृतियाँ उत्तर सहित इस विशेष विभाग में शामिल की गई हैं तथा अन्य कृतियाँ Q. R. Code के माध्यम से उपलब्ध कराई गई हैं।

बोर्ड कृतिपत्रिकाओं की कृतियाँ : बोर्ड परीक्षाओं (मार्च २०१९, २०२०, २०२२, जुलाई २०१९, दिसंबर २०२०) में पूछी गई महत्त्वपूर्ण कृतियों का उत्तर सहित समावेश किया गया है।

भाषा अध्ययन (व्याकरण) : इस विभाग में शब्द-भेद, काल, संधि, वाक्य-भेद आदि आवश्यक घटकों का उदाहरण व स्वाध्याय सहित विस्तारित वर्णन किया गया है।

उपयोजित लेखन : बोर्ड कृतिपत्रिका प्रारूप के अनुसार पत्र-लेखन, गद्य-आकलन, वृत्तांत-लेखन, कहानी-लेखन, विज्ञापन-लेखन व निबंध-लेखन की अधिकाधिक नमूना कृतियों के साथ ही स्वाध्याय भी इस विशेष विभाग में दिए गए हैं।

अपठित गद्यांश : इस विभाग में अपठित गद्यों का अधिकाधिक कृतियों सहित समावेश किया गया है।

नमूना व बोर्ड कृतिपत्रिकाएँ : बोर्ड परीक्षा की पूर्ण तैयारी हेतु यहाँ एक नमूना कृतिपत्रिका व मार्च २०२३ की बोर्ड कृतिपत्रिका दी गई है। इनकी उत्तरपत्रिकाएँ **Q. R. Code** के माध्यम से दी गई हैं।

खेल-खेल में : पाठ के अंत में आवश्यकतानुसार ज्ञानवर्धक एवं मनोरंजक कृतियाँ उत्तर सहित समाहित की गई हैं।

आओ जानें : पाठ में आए विभिन्न ज्ञानवर्धक मुद्दों का आवश्यकतानुसार सविस्तार वर्णन इस विशेष विभाग में किया गया है।

अंतर्गत मूल्यमापन : पुस्तिका के अंत में अंतर्गत मूल्यमापन का विस्तृत वर्णन किया गया है।

Target Publications

दसवीं कक्षा – हिंदी लोकभारती

कृतिपत्रिका का प्रारूप

समय : ३ घंटे **कुल अंक : ८० अंक**

		विभाग १ – गद्य	**२० अंक**
प्र.१	**(अ)**	**पठित गद्यांश** (१३० से १५० शब्द)	**८ अंक**
प्र.१	**(आ)**	**पठित गद्यांश** (१३० से १५० शब्द)	**८ अंक**
	१.	आकलन कृति (२ घटक, प्रत्येक के लिए १ अंक **अथवा** ४ घटक, प्रत्येक के लिए १/२ अंक)	२ अंक
	२.	आकलन कृति (२ घटक, प्रत्येक के लिए १ अंक **अथवा** ४ घटक, प्रत्येक के लिए १/२ अंक)	२ अंक
	३.	शब्दसंपदा (४ घटक, प्रत्येक के लिए १/२ अंक) (शब्दसंपदा कृति में अनेकार्थी शब्द, शब्दयुग्म, समानार्थी/पर्यायवाची शब्द, विलोम शब्द, उपसर्ग, प्रत्यय, अनेक शब्दों के लिए एक शब्द, कठिन शब्दों के अर्थ, लिंग, वचन, कृदंत, तद्धित, तत्सम, तद्भव तथा विदेशी शब्द आदि पूछे जा सकते हैं।)	२ अंक
	४.	अभिव्यक्ति (२५ से ३० शब्दों में)	२ अंक
प्र.१	**(इ)**	**अपठित गद्यांश** (८० से १०० शब्द)	**४ अंक**
	१.	आकलन कृति (२ घटक, प्रत्येक के लिए १ अंक **अथवा** ४ घटक, प्रत्येक के लिए १/२ अंक)	२ अंक
	२.	अभिव्यक्ति (२५ से ३० शब्दों में)	२ अंक
		विभाग २ – पद्य	**१२ अंक**
		सूचना – एक मध्ययुगीन और एक आधुनिक रचना का चयन आवश्यक है।	
प्र.२	**(अ)**	**पठित पद्यांश** (८ से १० पंक्तियाँ)	**६ अंक**
प्र.२	**(आ)**	**पठित पद्यांश** (८ से १० पंक्तियाँ)	**६ अंक**
	१.	आकलन कृति (२ घटक, प्रत्येक के लिए १ अंक **अथवा** ४ घटक, प्रत्येक के लिए १/२ अंक)	२ अंक
	२.	शब्दसंपदा (४ घटक, प्रत्येक के लिए १/२ अंक) (शब्दसंपदा कृति में अनेकार्थी शब्द, शब्दयुग्म, समानार्थी/पर्यायवाची शब्द, विलोम शब्द, उपसर्ग, प्रत्यय, अनेक शब्दों के लिए एक शब्द, कठिन शब्दों के अर्थ, लिंग, वचन, कृदंत, तद्धित, तत्सम, तद्भव तथा विदेशी शब्द आदि पूछे जा सकते हैं।)	२ अंक
	३.	सरल अर्थ (२५ से ३० शब्दों में)	२ अंक
		विभाग ३ – पूरक पठन	**८ अंक**
प्र.३	**(अ)**	**पठित गद्यांश** (८० से १०० शब्द)	**४ अंक**
	१.	आकलन कृति (२ घटक, प्रत्येक के लिए १ अंक **अथवा** ४ घटक, प्रत्येक के लिए १/२ अंक)	२ अंक
	२.	अभिव्यक्ति (२५ से ३० शब्दों में)	२ अंक
	(आ)	**पठित पद्यांश** (६ से ८ पंक्तियाँ)	**४ अंक**
	१.	आकलन कृति (२ घटक, प्रत्येक के लिए १ अंक **अथवा** ४ घटक, प्रत्येक के लिए १/२ अंक)	२ अंक
	२.	अभिव्यक्ति (२५ से ३० शब्दों में)	२ अंक

Target Publications

विभाग ४ – भाषा अध्ययन (व्याकरण)	१४ अंक

प्र.४ सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए :

१.	शब्दभेद– संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण पहचानना (१ घटक, १ अंक)	१ अंक
२.	दो अव्यय शब्दों में से किसी एक शब्द का वाक्य में प्रयोग करना (१ घटक, १ अंक)	१ अंक
३.	संधि (दो में से कोई एक पहचानना, विच्छेद करना, संधि शब्द बनाना) (२ घटक, प्रत्येक के लिए १/२ अंक)	१ अंक
४.	दो में से कोई एक सहायक क्रिया पहचानना तथा उसका मूल रूप लिखना (२ घटक, प्रत्येक के लिए १/२ अंक)	१ अंक
५.	दो में से किसी एक प्रेरणार्थक क्रिया का प्रथम तथा द्वितीय रूप लिखना (२ घटक, प्रत्येक के लिए १/२ अंक)	१ अंक
६.	मुहावरे का चयन अथवा मुहावरे का अर्थ और वाक्य में प्रयोग करना	१ अंक
७.	कारक– पहचानना और भेद लिखना (२ घटक, प्रत्येक के लिए १/२ अंक)	१ अंक
८.	विरामचिह्न– वाक्य में प्रयोग (२ घटक, प्रत्येक के लिए १/२ अंक)	१ अंक
९.	तीन में से दो वाक्यों का काल परिवर्तन (२ घटक, प्रत्येक के लिए १ अंक)	२ अंक
१०.	वाक्य के भेद	२ अंक
	i. रचना के आधार पर वाक्य का भेद पहचानना (१ घटक, १ अंक)	
	ii. अर्थ के आधार पर वाक्य परिवर्तन करना (१ घटक, १ अंक)	
११.	वाक्य शुद्ध करना (४ घटक, प्रत्येक के लिए १/२ अंक, दो वाक्य, प्रत्येक वाक्य में दो अशुद्धियाँ)	२ अंक

विभाग ५ – रचना विभाग (उपयोजित लेखन)	२६ अंक

प्र.५ सूचना के अनुसार लिखिए :

(अ)	१.	पत्र-लेखन (औपचारिक/अनौपचारिक) (दो में से एक) (विकल्प अंक : ५)	५ अंक
	२.	गद्य-आकलन (अपठित गद्यांश पर आधारित ४ प्रश्न तैयार करना)	४ अंक
(आ)	१.	वृत्तांत-लेखन (७० से ८० शब्दों में)	५ अंक
		अथवा	
		कहानी-लेखन (मुद्दों के आधार पर) (७० से ८० शब्दों में) (विकल्प अंक : ५)	
	२.	विज्ञापन-लेखन (५० से ६० शब्दों में)	५ अंक
(इ)		निबंध-लेखन (तीन में से किसी एक विषय पर ८० से १०० शब्दों में) (विकल्प अंक : १४)	७ अंक

(पाँच प्रकारों में से तीन प्रकार के विषय देने हैं। विद्यार्थियों को उनमें से किसी एक विषय पर निबंध लिखना है।)

लोकभारती कुल अंक विभाजन

लिखित परीक्षा – ८० अंक

विभाग	घटक	अंक	विकल्प अंक
१	गद्य	२०	
२	पद्य	१२	
३	पूरक पठन	०८	
४	भाषा अध्ययन (व्याकरण)	१४	०५
५	उपयोजित लेखन	२६	२४
	कुल अंक	८०	२९

अंतर्गत मूल्यमापन – २० अंक

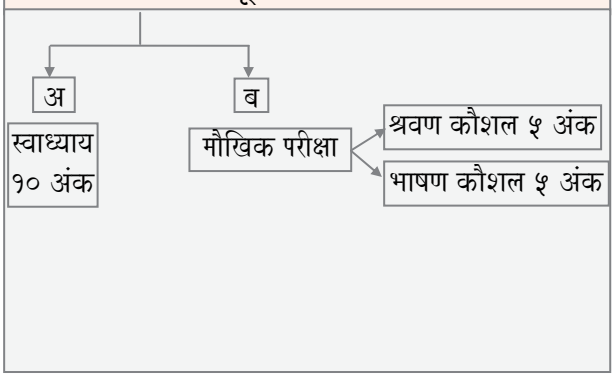

Target Publications

विषय - सूची

क्र.	पाठ का नाम	रचनाकार	पृष्ठ
	पहली इकाई		
१.	भारत महिमा	जयशंकर प्रसाद	१
२.	लक्ष्मी	गुरुबचन सिंह	६
३.	वाह रे! हमदर्द	घनश्याम अग्रवाल	१६
४.	मन (पूरक पठन)	विकास परिहार	२५
५.	गोवा : जैसा मैंने देखा	विनय शर्मा	३०
६.	गिरिधर नागर	संत मीराबाई	४०
७.	खुला आकाश (पूरक पठन)	कुँवर नारायण	४५
८.	गजल	माणिक वर्मा	५१
९.	रीढ़ की हड्डी	जगदीशचंद्र माथुर	५७
१०.	ठेस (पूरक पठन)	फणीश्वरनाथ रेणु	६६
११.	कृषक गान	दिनेश भारद्वाज	७५
	दूसरी इकाई		
१.	बरषहिं जलद	गोस्वामी तुलसीदास	७९
२.	दो लघुकथाएँ (पूरक पठन)	नरेंद्रकौर छाबड़ा	८४
३.	श्रम साधना	श्रीकृष्णदास जाजू	९०
४.	छापा	ओमप्रकाश 'आदित्य'	१०१
५.	ईमानदारी की प्रतिमूर्ति	सुनील शास्त्री	१०७
६.	हम उस धरती की संतति हैं (पूरक पठन)	उमाकांत मालवीय	११६
७.	महिला आश्रम	काका कालेलकर	१२१
८.	अपनी गंध नहीं बेचूँगा	बालकवि बैरागी	१२८
९.	जब तक जिंदा रहूँ, लिखता रहूँ	विश्वनाथ प्रसाद तिवारी	१३३
१०.	बूढ़ी काकी (पूरक पठन)	प्रेमचंद	१४२
११.	समता की ओर	मुकुटधार पांडेय	१५२
•	अपठित गद्यांश		१५७
	भाषा अध्ययन (व्याकरण)		१६१
	उपयोजित लेखन		
१.	पत्र-लेखन		१७४
२.	गद्य-आकलन (प्रश्न निर्मिति)		१८२
३.	वृत्तांत-लेखन		१८५
४.	कहानी-लेखन		१८८
५.	विज्ञापन-लेखन		१९२
६.	निबंध-लेखन		१९५
•	अंतर्गत मूल्यमापन		२०३
•	नमूना कृतिपत्रिका (Q. R. Code के माध्यम से उत्तरपत्रिका)		२०४
•	बोर्ड कृतिपत्रिका : मार्च 2023 (Q. R. Code के माध्यम से उत्तरपत्रिका)		२११

निर्देश : पाठ में दी गई कृतियों को * के द्वारा दर्शाया गया है।

Target Publications

पहली इकाई

9 भारत महिमा

– जयशंकर प्रसाद

परिचय

यह ताल व लय से युक्त एक सुंदर कविता है। भारत देश पर प्रकृति का आशीर्वाद हमेशा से रहा है। भारत में ही सबसे पहले सभ्यता व संस्कृति का विकास हुआ है। यहाँ भारत देश की महिमा का बहुत ही सुंदर ढंग से चित्रण किया गया है। इसके साथ ही कवि ने देश पर अपना सब कुछ निछावर करने के लिए तैयार रहने का संदेश देशवासियों को दिया है।

शब्द संसार

शब्दार्थ

अखिल	संपूर्ण (whole, all)
अशोक	जिसे शोक न हो, शोकरहित (having no sorrow)
आलोक	प्रकाश (light)
उपहार	भेंट (gift)
उषा	भोर (dawn)
कर	हाथ (hand)
गर्व	अभिमान (pride)
चरित	चरित्र (character)
टेव	आदत (habit)
तम	अँधेरा (darkness)
धरा	धरती (earth)
नष्ट	समाप्त (destroyed)
पुंज	ढेर, समूह (pile, heap)
पूत	पवित्र (holy)
प्रतिज्ञा	कसम (oath)
लोक	संसार (world)
वाणी	वचन (speech)
विपन्न	निर्धन (poor)
विमल	निर्मल, साफ (clear)
व्योम	आकाश (sky)
संचय	एकत्रित (collection)
संसृति	संसार (world)
सप्तस्वर	सात स्वर (the seven notes in Indian classical music)
सप्रीत	प्रीत के साथ (with love)
सम्राट	राजा (king)
सर्वस्व	संपूर्ण (entire, all)
हर्ष	खुशी (happiness)
हीरक हार	हीरों का हार (diamond necklace)

मुहावरा

***निछावर करना** – अर्पण करना, समर्पित करना।

भावार्थ / सरल अर्थ

१. **हिमालय के आँगन में ..... पहनाया हीरक हार।**

अर्थ : कवि भारत देश की महिमा का गुणगान करते हुए कहता है कि सूर्य सबसे पहले अपनी किरणों का उपहार हिमालय के आँगन अर्थात भारत को देता है। सुबह हिमालय की बर्फ पर जब सूर्य की किरणें पड़ती हैं, तो बर्फ हीरे की तरह चमकने लगता है। उस समय ऐसा लगता है जैसे उषा ने हँसकर स्वागत करते हुए भारत को हीरे का हार पहना दिया है।

२. **जगे हम, लगे जगाने ..... अखिल संसृति हो उठी अशोक।**

अर्थ : सबसे पहले भारत ज्ञानी बना। उसके बाद हमने अन्य देशों में ज्ञान का प्रचार-प्रसार किया। पूरे विश्व में ज्ञान फैलने से अज्ञान का अँधेरा खत्म हो गया और संसार के सभी दुखों का अंत हो गया।

३. **विमल वाणी ने ..... छिड़ा तब मधुर साम संगीत।...**

अर्थ : विद्या की देवी माता सरस्वती ने कमल के समान अपने कोमल हाथों में प्रेम से वीणा ली। उस वीणा से प्राचीन भारत जिसे सात नदियों का देश कहा जाता है, वहाँ सात स्वर गूँजे। इस तरह सामवेद के संगीत का निर्माण भारत देश में हुआ।

४. **विजय केवल लोहे ..... दिखलाते घर-घर घूम।**

अर्थ : भारत में लोहा मतलब शक्ति से अधिक धर्म का महत्त्व रहा है। यहाँ महान सम्राट अशोक ने लोगों के कल्याण के लिए अपना राज्य त्याग दिया। उन्होंने भिक्षु के रूप में घूम-घूमकर लोगों को दया व शांति का संदेश दिया।

५. **'यवन' को दिया ..... सिंहल को भी सृष्टि।**

अर्थ : भारत वीरों की भूमि है। यहाँ चंद्रगुप्त मौर्य जैसे राजा हुए। उन्होंने भारत पर आक्रमण करने वाले यवन के सेल्युकस को हराकर उसे सजा न दी, बल्कि उसे जीवनदान देकर भारत से भगा दिया। सम्राट अशोक के अनुयायी भिक्षुओं ने चीन में जाकर धर्म का प्रचार किया। उन्होंने स्वर्ण भूमि अर्थात बर्मा के लोगों को बौद्ध धर्म के त्रिरत्न का ज्ञान कराया। सिंहल द्वीप अर्थात श्रीलंका को पंचशील के सिद्धांतों के बारे में भी बताया।

Target Publications

६. किसी का हमने छीना ..... हम आए थे नहीं।...

अर्थ : हम भारतवासियों ने किसी का कुछ नहीं छीना। इस भूमि पर प्रकृति का आशीर्वाद हमेशा से रहा है। इस कारण यहाँ कभी किसी चीज की कमी नहीं हुई है। हमारी जन्मभूमि यही है। हम कहीं और से नहीं आए हैं।

७. चरित थे पूत ..... देख न सके विपन्न।

अर्थ : भारतवासियों का चरित्र हमेशा से ही पवित्र रहा है। हमारी भुजाओं में शक्ति है और विनम्रता हमारा गहना है। हमें भारतवासी होने का गर्व है। हम किसी को गरीबी व दुख में नहीं देख सकते हैं।

८. हमारे संचय में था ..... प्रतिज्ञा में रहती थी टेव।

अर्थ : संचय करना भारतवासियों की एक विशेषता है, लेकिन उस संचय का उद्देश्य दान होता है। अतिथि का हम देवता की तरह सम्मान करते हैं। हम सदैव सत्य बोलते हैं। हमारे हृदय में तेज है और हम अपनी प्रतिज्ञा पूरी करते हैं।

९. वही है रक्त, वही है देश ..... हम दिव्य आर्य संतान।

अर्थ : समय भले ही बदल गया हो, लेकिन आज भी भारतवासियों में उनके पूर्वजों का खून है। हमारा देश आज भी वैसा ही है। हमारे भीतर साहस और ज्ञान भरा हुआ है। हम आज भी शांति के पुजारी हैं और हमारे भीतर वैसी ही ताकत है, क्योंकि हम दिव्य आर्यों की संतानें हैं।

१०. जिएँ तो सदा ..... हमारा प्यारा भारतवर्ष।

अर्थ : हम अपने इस प्यारे भारत के लिए जीना चाहते हैं। हमें गर्व है कि हम भारतवासी हैं। हम अपने प्यारे भारत के लिए सब कुछ न्योछावर कर सकते हैं।

पद्यांश – १

पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्रमांक १

[हिमालय के आँगन में .....
..... सिंहल को भी सृष्टि।]

निर्देश

यहाँ पद्यांश की पंक्तियों को पूरा न देते हुए उसके आरंभ और अंत के शब्द संकेत के लिए दिए गए हैं। विद्यार्थी पाठ्यपुस्तक से इन पंक्तियों को पढ़ें। ज्ञात हो कि परीक्षा में पद्यांश की पूरी पंक्तियाँ दी जाएँगी, जिसके आधार पर कृतियों के उत्तर लिखने होंगे।

१ – आकलन कृतियाँ

१. आकृति पूर्ण कीजिए :

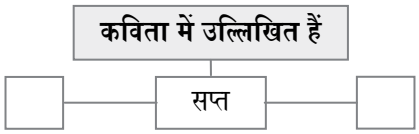

उत्तर : १. स्वर २. सिंधु

***२. लिखिए :**

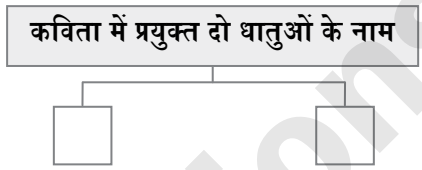

उत्तर : १. लोहा २. स्वर्ण

३. संजाल पूर्ण कीजिए :

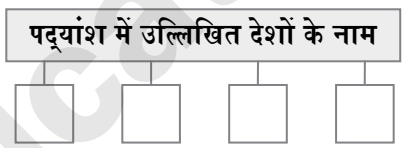

उत्तर : १. भारतवर्ष २. चीन
३. स्वर्ण भूमि (बर्मा) ४. सिंहल (श्रीलंका)

४. ऐसे प्रश्न तैयार कीजिए जिनके उत्तर निम्नलिखित शब्द हों :

१. हिमालय २. धर्म

उत्तर : १. पद्यांश में किसके आँगन का उल्लेख किया गया है ?
२. भारत की धरती पर किसकी धूम रही ?

५. उचित जोड़ियाँ मिलाइए :

क्र.	अ.		ब.
१.	किरण	अ.	अभिनंदन
२.	उषा	ब.	सम्राट
३.	अखिल संसृति	क.	उपहार
४.	भिक्षु	ड.	अशोक

उत्तर : (१ - क), (२ - अ), (३ - ड), (४ - ब)।

२ – शब्द संपदा

१. निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए :

१. कोमल २. मधुर
३. विजय ४. धर्म

उत्तर : १. कठोर २. कटु
३. पराजय ४. अधर्म

Target Publications

२. निम्नलिखित शब्दों से उपसर्गयुक्त शब्द बनाइए :

१.	हार	२.	धर्म
३.	घर	४.	दृष्टि

उत्तर : १. प्रहार २. अधर्म
३. बेघर ४. कुदृष्टि

३ – सरल अर्थ

१. पद्यांश की अंतिम दो पंक्तियों का सरल अर्थ लिखिए।

उत्तर : कवि कहता है कि भारत वीरों की भूमि है। यहाँ चंद्रगुप्त मौर्य जैसे राजा हुए। उन्होंने भारत पर आक्रमण करने वाले यवन के सेल्युकस को हराकर उसे सजा न दी, बल्कि उसे जीवनदान देकर भारत से भगा दिया। सम्राट अशोक के अनुयायी भिक्षुओं ने चीन में जाकर धर्म का प्रचार किया। उन्होंने स्वर्ण भूमि अर्थात बर्मा के लोगों को बौद्ध धर्म के त्रिरत्न का ज्ञान कराया। सिंहल द्वीप अर्थात श्रीलंका को पंचशील के सिद्धांतों के बारे में भी बताया।

आओ जानें

बौद्ध धर्म के त्रिरत्न

बुद्ध, धम्म और संघ को बौद्ध धर्म का त्रिरत्न अर्थात तीन रत्न कहा जाता है। यहाँ बुद्ध का मतलब भगवान गौतम बुद्ध, धम्म का मतलब बौद्ध धर्म के सिद्धांत व शिक्षा और संघ का मतलब बौद्ध भिक्षुओं व उपासकों का संगठन है।

पंचशील

'पंच' का अर्थ पाँच और 'शील' अर्थात आचरण होता है। इसे बौद्ध धर्म की आचार संहिता कही जाती है। इसमें हिंसा न करना, चोरी न करना, व्यभिचार न करना, झूठ न बोलना और नशा न करने का समावेश है।

पद्यांश – २

पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्रमांक १

[किसी का हमने छीना नहीं ....
.... हमारा प्यारा भारतवर्ष।]

१ – आकलन कृतियाँ

***१. लिखिए :**

भारतीय संस्कृति की दो विशेषताएँ

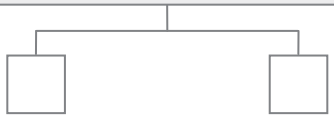

उत्तर : १. किसी का कुछ नहीं छीनना।
२. किसी को गरीबी और दुख में नहीं देख सकना।

निर्देश : इस कृति के उत्तर के कुछ अन्य विकल्प निम्नलिखित हैं :
१. संचय का उद्देश्य दान होना।
२. अतिथि को देव मानना।
३. सदैव सत्य बोलना
४. प्रतिज्ञा में दृढ़ता व तेज होना।

२. संजाल पूर्ण कीजिए :

समय बीतने के बाद आज भी वही है

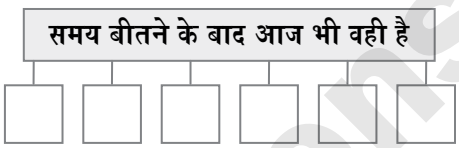

उत्तर : १. रक्त २. देश
३. साहस ४. ज्ञान
५. शांति ६. शक्ति

***३. निम्नलिखित पंक्तियों का तात्पर्य लिखिए :**

१. कहीं से हम आए थे नहीं ....

उत्तर : भारत में रहने वाले भारतवासी कहीं और से यहाँ रहने के लिए नहीं आए हैं। भारतवासियों की जन्मस्थली भारत ही है। सभी भारतीय यहीं के निवासी हैं।

२. वही हम दिव्य आर्य संतान ....

उत्तर : सभी भारतवासी उन्हीं दिव्य आर्यों की संतानें हैं, जिनमें साहस व शक्ति थी।

***४. उचित जोड़ियाँ मिलाइए :**

संचय, सत्य, अतिथि, रत्न, वचन, दान, हृदय, तेज, देव

अथवा

उचित जोड़ियाँ मिलाकर लिखिए : [मार्च २०२२]

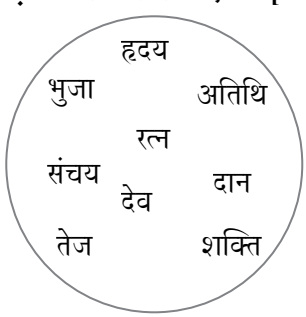

उत्तर :

क्र.	अ	आ
१.	संचय	दान
२.	सत्य	वचन
३.	अतिथि	देव
४.	हृदय	तेज
५.	भुजा	शक्ति

Target Publications

२ – शब्द संपदा

१. उपसर्ग और प्रत्यय लगाकर नये शब्द लिखिए : **[मार्च २०२२]**

उपसर्गयुक्त	नम्र	प्रत्ययुक्त
_____		_____

उत्तर :

उपसर्गयुक्त	नम्र	प्रत्ययुक्त
विनम्र		**नम्रता**

२. निम्न शब्दों के लिए पद्यांश में आए विलोमार्थी शब्द लिखिए : **[मार्च २०२२]**

१. अज्ञान २. दानव

उत्तर : १. ज्ञान २. देव

३ – सरल अर्थ

१. पद्यांश की प्रथम दो पंक्तियों के बाद की चार पंक्तियों का सरल अर्थ लिखिए।

अथवा

पद्यांश की प्रारंभिक चार पंक्तियों का सरल अर्थ 25 से 30 शब्दों में लिखिए। **[मार्च २०२२]**

उत्तर : कवि कहता है कि हम भारतवासियों का चरित्र हमेशा से ही पवित्र रहा है। हमारी भुजाओं में शक्ति का संचार होता है और विनम्रता हमारा गहना है। भारतवासी होने के नाते हम सदैव गौरवान्वित रहते हैं। हम किसी को दुख में नहीं देख सकते हैं।

संचय करना भारतवासियों की एक विशेषता है, लेकिन उस संचय का उद्देश्य दान होता है। अतिथि का हम देवता की भाँति सम्मान करते हैं। हम सदैव सत्य बोलते हैं और आज भी हमारी प्रतिज्ञा में पहले की भाँति वही दृढ़ता व तेज है।

पाठ पर आधारित कृतियाँ

***१. प्रस्तुत कविता की अपनी पसंदीदा किन्हीं दो पंक्तियों का भावार्थ लिखिए।**

उत्तर : प्रस्तुत कविता की प्रथम दो पंक्तियाँ मेरी पसंदीदा हैं। कवि भारत देश की महिमा का गुणगान करते हुए कहता है कि सूर्य सबसे पहले अपनी किरणों का उपहार हिमालय के आँगन अर्थात भारत को देता है। सुबह हिमालय की बर्फ पर जब सूर्य की किरणें पड़ती हैं, तो बर्फ हीरे की तरह चमकने लगता है। उस समय ऐसा लगता है जैसे उषा ने हँसकर स्वागत करते हुए भारत को हीरे का हार पहना दिया है।

भाषा अध्ययन (व्याकरण)

१. अधोरेखांकित शब्दों के भेद लिखिए :

१. यह राम का भाई है।
२. तुम जल्दी से भोजन तैयार करो।
३. कौन गाना गा रहा है ?
४. जैसा बोओगे, वैसा काटोगे।

उत्तर : १. राम - संज्ञा २. तुम - सर्वनाम
३. गाना - संज्ञा
४. जैसा-वैसा - सर्वनाम

२. निम्नलिखित अव्यय शब्दों का वाक्यों में प्रयोग कीजिए :

१. के बाहर २. प्रतिदिन
३. अथवा ४. कहाँ

उत्तर : १. इसे धक्के मारकर राज्य के बाहर निकाल दो।
२. वह प्रतिदिन मीना के साथ खेलता है।
३. काम पूरा करो अथवा वेतन भूल जाओ।
४. ईश्वर कहाँ जा रहे हो ?

३. तालिका पूर्ण कीजिए :

क्र.	संधि शब्द	संधि विच्छेद	भेद
१.	_____	सम् + चय	_____
२.	निश्चल	_____	_____
३.	_____	वि + अर्थ	_____
४.	विद्यार्थी	_____	_____

उत्तर :

क्र.	संधि शब्द	संधि विच्छेद	भेद
१.	संचय	सम् + चय	व्यंजन संधि
२.	निश्चल	नि : + चल	विसर्ग संधि
३.	व्यर्थ	वि + अर्थ	स्वर संधि
४.	विद्यार्थी	विद्या + अर्थी	स्वर संधि

४. निम्नलिखित वाक्यों में से सहायक क्रियाएँ पहचानकर उनके मूल रूप लिखिए :

१. अंजुम ने टेबल गंदा कर दिया।
२. श्रद्धा ने फौरन चिकित्सक को बुला लिया।
३. पुस्तक मेज पर रख दी।
४. वह सो चुका।

उत्तर : १. दिया – देना २. लिया – लेना
३. दी – देना ४. चुका – चुकना

Target Publications

५. निम्नलिखित क्रियाओं के प्रथम तथा द्वितीय प्रेरणार्थक क्रियारूप लिखिए :

१. सीना २. बढ़ना
३. पढ़ना ४. जगना

उत्तर :

क्र.	क्रियाएँ	प्रथम प्रेरणार्थक	द्वितीय प्रेरणार्थक
१.	सीना	सिलाना	सिलवाना
२.	बढ़ना	बढ़ाना	बढ़वाना
३.	पढ़ना	पढ़ाना	पढ़वाना
४.	जगना	जगाना	जगवाना

६. निम्नलिखित मुहावरे का अर्थ लिखकर वाक्य में प्रयोग कीजिए : [मार्च २०२०]

निछावर करना

उत्तर : निछावर करना – अर्पण करना, समर्पित करना।

वाक्य : सैनिक अपनी मातृभूमि की खातिर अपना सर्वस्व निछावर करने से भी कतराते नहीं हैं।

७. निम्नलिखित वाक्यों में प्रयुक्त कारक पहचानकर भेद सहित लिखिए :

१. रवीना पेड़ से गिर पड़ी।
२. यह संजना की कलम है।
३. कृष्ण ने जन्म लिया।
४. अरे बेटा! यहाँ तो बड़े सुंदर फूल हैं।

उत्तर : १. से – अपादान कारक
२. की – संबंध कारक
३. ने – कर्ता कारक
४. अरे! – संबोधन कारक

८. निम्नलिखित वाक्यों में उचित विरामचिह्नों का प्रयोग कीजिए :

१. हे प्रभु आप सभी के रक्षक हैं
२. देवसेना का आना जाना शुरू हो गया
३. बाराती नाचते गाते द्वार पर पहुँच गए
४. अब डॉ गोपाल क्या पहनेगा

उत्तर : १. हे प्रभु! आप सभी के रक्षक हैं।
२. देवसेना का आना-जाना शुरू हो गया।
३. बाराती नाचते-गाते द्वार पर पहुँच गए।
४. अब डॉ. गोपाल क्या पहनेगा?

९. निम्नलिखित वाक्यों का सूचना के अनुसार काल परिवर्तन कीजिए :

१. लोमड़ी बहुत भूखी थी। (सामान्य भविष्य काल)
२. नेता जी कल शपथ ग्रहण करेंगे। (अपूर्ण भूत काल)
३. शीबा नाच रही है। (पूर्ण वर्तमान काल)
४. शिवानी खाना खा चुकी। (पूर्ण भूत काल)

उत्तर : १. लोमड़ी बहुत भूखी होगी।
२. नेता जी कल शपथ ग्रहण कर रहे थे।
३. शीबा नाच चुकी है।
४. शिवानी खाना खा चुकी थी।

१०.

i. निम्नलिखित वाक्यों के रचना के अनुसार भेद लिखिए :

१. समीर बड़ों की बात सुनता है।
२. जो सहनशील होता है, उसका सम्मान होता है।
३. परिश्रमी व्यक्ति को सफलता मिलती है।
४. रमेश गंदा लड़का है और विजय अच्छा लड़का है।

उत्तर : १. सरल वाक्य २. मिश्र वाक्य
३. सरल वाक्य ४. संयुक्त वाक्य

ii. अर्थ के आधार पर वाक्य परिवर्तन कीजिए :

१. हिमालय ने भारत को उपहार दिया। (प्रश्नार्थक वाक्य)
२. विमल ने हाथों में वीणा ली। (आज्ञार्थक वाक्य)
३. लोहा हमेशा विजयी नहीं होता है। (विधानार्थक वाक्य)
४. उसमें आज भी वही शक्ति है। (विस्मयार्थक वाक्य)

उत्तर : १. क्या हिमालय ने भारत को उपहार दिया?
२. विमल हाथों में वीणा लो।
३. लोहा हमेशा विजयी होता है।
४. सचमुच! उसमें आज भी वही शक्ति है।

११. निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध करके लिखिए :

१. इंजमाम ने यह चिट्ठि लिखि है।
२. अंकित रोज भृमण करने जाती है।
३. पिता जि ने अपने लिए नए वस्तृ खरीदे।
४. मेरी आख से आसू निकलने लगे।

उत्तर : १. इंजमाम ने यह चिट्ठी लिखी है।
२. अंकित रोज भ्रमण करने जाता है।
३. पिता जी ने अपने लिए नए वस्त्र खरीदे।
४. मेरी आँख से आँसू निकलने लगे।

[निर्देश : *पद्य विश्लेषण के उत्तर हेतु दिए गए Q. R. Code को *Quill - The Padhai App* द्वारा स्कैन करें।**]**

[सूचना : कविता का भावार्थ सरलता से समझने के लिए दिए गए Q. R. Code को *Quill - The Padhai App* द्वारा स्कैन कर वीडियो देखिए।**]**

Target Publications

Page no. **6** to **160** are purposely left blank.

To see complete chapter buy **Target Notes** or **Target E-Notes**

Target Publications

भाषा अध्ययन (व्याकरण)

१. सव्यय (विकारी शब्द) (Parts of Speech)

सव्यय (विकारी शब्द) वे शब्द हैं, जिनके रूप लिंग, वचन और कारक के आधार पर बदल जाते हैं।
जैसे – लड़का, लड़के, लड़कों आदि अनेक रूप बनते हैं।
सव्यय (विकारी शब्द) के चार भेद हैं :

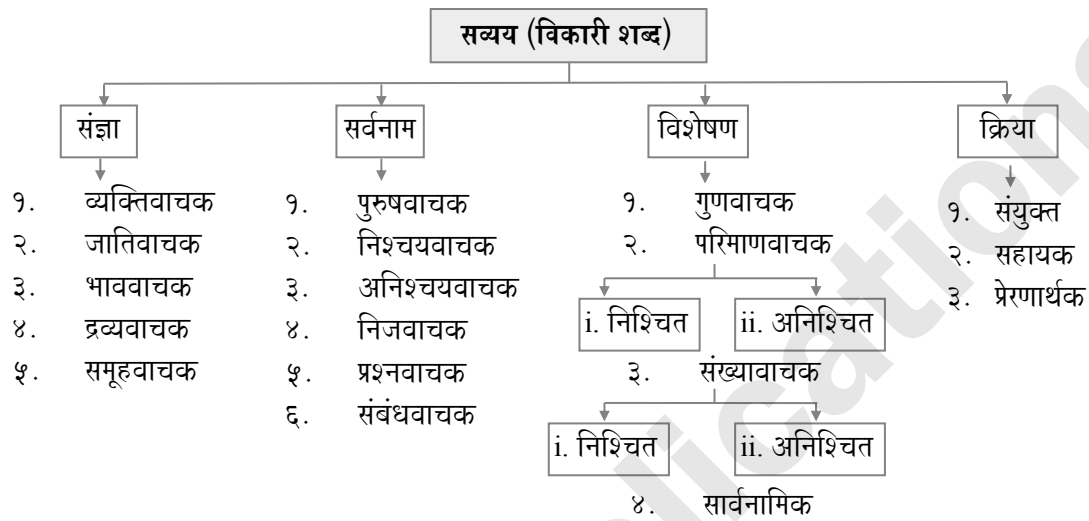

सूचना : सव्यय में संज्ञा, सर्वनाम व विशेषण पर आधारित कृति पूछी जाएगी जबकि क्रिया पर आधारित कृतियाँ अलग से पूछी जाएँगी।

संज्ञा (Noun)

किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान या भाव के नाम को **संज्ञा** कहते हैं।
जैसे – मोहन, कलम, दिल्ली, सुंदरता, कक्षा, संघ आदि।
संज्ञा के पाँच भेद हैं :

१. **व्यक्तिवाचक संज्ञा**
जिस संज्ञा से किसी विशेष व्यक्ति, वस्तु या स्थान का बोध होता है, उसे **व्यक्तिवाचक संज्ञा** कहते हैं।
जैसे – सरिता, रामायण, लखनऊ, गोदावरी आदि।
उदाहरण : नागर जी, हम लोगों ने आपका बहुत समय लिया।

२. **जातिवाचक संज्ञा**
जिस संज्ञा से किसी एक जाति अथवा वर्ग का बोध होता है, उसे **जातिवाचक संज्ञा** कहते हैं।
जैसे – पुरुष, कुत्ता, पक्षी, शहर, पेड़ आदि।
उदाहरण : वह बूढ़े बैल की तरह आगे बढ़ रहा था।

३. **भाववाचक संज्ञा**
जिस संज्ञा से किसी व्यक्ति, वस्तु अथवा स्थान के गुण, दोष, स्वभाव, धर्म आदि का बोध होता है, उसे **भाववाचक संज्ञा** कहते हैं।
जैसे – वीरता, स्वाद, बुढ़ापा, क्रोध, दुश्मनी आदि।
उदाहरण : हवा में नमी बनी रहती है।

४. **द्रव्यवाचक संज्ञा**
जो संज्ञा शब्द द्रव्य, धातु आदि पदार्थों का नाम बताते हैं, उन्हें **द्रव्यवाचक संज्ञा** कहते हैं।
जैसे – सोना, लोहा, पानी, ताँबा आदि।
उदाहरण : गाय ने दूध देना बंद कर दिया है।

५. **समूहवाचक संज्ञा**
वे संज्ञा शब्द जो समूह का बोध कराते हैं, उन्हें **समूहवाचक संज्ञा** कहते हैं।
जैसे – सेना, कक्षा, संस्था, भीड़, गुच्छा आदि।
उदाहरण : संस्था अपने आप चलेगी।

सर्वनाम (Pronoun)

संज्ञा के स्थान पर प्रयोग में लाए जाने वाले शब्दों को **सर्वनाम** कहते हैं।
जैसे – मैं, तुम, वह, कौन आदि।
सर्वनाम के छह भेद हैं :

१. **पुरुषवाचक सर्वनाम**
जिस व्यक्ति के विषय में बोला या लिखा जाता है, उसके बदले में आने वाले सर्वनाम को **पुरुषवाचक सर्वनाम** कहते हैं।

Target Publications

पुरुषवाचक सर्वनाम के तीन भेद हैं :

क. प्रथम पुरुष : जिन सर्वनाम शब्दों का प्रयोग वक्ता अपने लिए करता है, उन्हें **प्रथम पुरुष** कहते हैं। इसमें मैं, हम आदि का प्रयोग होता है।

उदाहरण : मैंने इन तारीखों को पत्र लिखें।

ख. मध्यम पुरुष : जिन सर्वनाम शब्दों का प्रयोग श्रोता के लिए किया जाता है, उन्हें **मध्यम पुरुष** कहते हैं। इसमें तू, तुम, आप आदि का प्रयोग होता है।

उदाहरण : आपको विलायती चाय पसंद है या हिंदुस्तानी ?

ग. अन्य पुरुष : जिन सर्वनाम शब्दों का प्रयोग किसी तीसरे व्यक्ति के लिए किया जाता है, उन्हें **अन्य पुरुष** कहते हैं। इसमें वह, यह, वे, इनका आदि का प्रयोग किया जाता है।

उदाहरण : वह लक्ष्मी को सड़क पर ले आया।

२. निश्चयवाचक सर्वनाम

जिस सर्वनाम से किसी निश्चित व्यक्ति अथवा वस्तु का ज्ञान होता है, उसे **निश्चयवाचक सर्वनाम** कहते हैं।

उदाहरण : वह मेरा घर है।

३. अनिश्चयवाचक सर्वनाम

जिस सर्वनाम से किसी व्यक्ति अथवा वस्तु का निश्चित ज्ञान न हो, उसे **अनिश्चयवाचक सर्वनाम** कहते हैं।

उदाहरण : एक मकान पर कोई लदा पड़ा है।

४. निजवाचक सर्वनाम

वे सर्वनाम शब्द जिनके प्रयोग से निजत्व या अपनेपन का बोध होता है, उन्हें **निजवाचक सर्वनाम** कहते हैं।

उदाहरण : उसकी खुद की आवश्यकता भी पूरी नहीं होती।

५. प्रश्नवाचक सर्वनाम

जिन सर्वनाम शब्दों का प्रयोग प्रश्न पूछने के लिए किया जाता है, उन्हें **प्रश्नवाचक सर्वनाम** कहते हैं।

उदाहरण : काकी को किसकी तीव्रता न खलती ?

६. संबंधवाचक सर्वनाम

वे सर्वनाम शब्द जो एक शब्द या वाक्य का दूसरे शब्द या वाक्य से संबंध जोड़ते हैं, उन्हें **संबंधवाचक सर्वनाम** कहते हैं।

उदाहरण : जो करेगा, वो भरेगा।

विशेषण (Adjective)

जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताते हैं, उन्हें **विशेषण** कहते हैं।

जैसे – सुंदर, कठोर, लंबा, मीठा, एक आदि।

विशेषण के चार भेद हैं :

१. गुणवाचक विशेषण

वे शब्द जो किसी संज्ञा या सर्वनाम के गुण, दोष, रंग, आकार, दशा आदि की विशेषता बताते हैं, उन्हें **गुणवाचक विशेषण** कहते हैं।

उदाहरण : व्यापारियों के पास जाकर उनको धनवान बनाता है।

२. परिमाणवाचक विशेषण

जिन शब्दों से संज्ञा या सर्वनाम के माप-तौल या मात्रा का ज्ञान होता है, उन्हें **परिमाणवाचक विशेषण** कहते हैं।

इसके दो भेद हैं :

क. निश्चित परिमाणवाचक विशेषण : जिस शब्द से निश्चित माप-तौल का बोध हो, उसे **निश्चित परिमाणवाचक विशेषण** कहते हैं।

उदाहरण : गऊशाला यहाँ से दो किलोमीटर दूर है।

ख. अनिश्चित परिमाणवाचक विशेषण : जिस शब्द से अनिश्चित माप-तौल का बोध हो, उसे **अनिश्चित परिमाणवाचक विशेषण** कहते हैं।

उदाहरण : थोड़ी मिठाई लेकर आई।

३. संख्यावाचक विशेषण

जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम की संख्या से संबंधित विशेषता का बोध कराते हैं, उन्हें **संख्यावाचक विशेषण** कहते हैं।

इसके दो भेद हैं :

क. निश्चित संख्यावाचक विशेषण : जिस शब्द से निश्चित संख्या का बोध हो, उसे **निश्चित संख्यावाचक विशेषण** कहते हैं।

उदाहरण : गोवा राज्य दो भागों में बँटा है।

ख. अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण : जिस शब्द से अनिश्चित संख्या का बोध हो, उसे **अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण** कहते हैं।

उदाहरण : कुछ व्यवसाय ऐसे हैं।

४. सार्वनामिक विशेषण

जो सर्वनाम शब्द किसी संज्ञा से पहले आकर उसकी विशेषता बताते हैं, उन्हें **सार्वनामिक विशेषण** कहते हैं।

उदाहरण : अपना सरकारी ओहदा छोड़ दिया।

Target Publications

स्वाध्याय

१. अधोरेखांकित शब्दों के भेद लिखिए :

१. मानू दीदी का दूल्हा अफसर आदमी है।
२. क्या तुम गाय खरीदने आए हो ?
३. गांधी जी ने इस आशय का सूत्र बताया।
४. उसकी आँखों में आँसू उतर आए।
५. हम सभी दौड़ पड़े।
६. सिरचन जाति का कारीगर है।
७. आपका कोर्स खत्म होने में अब साल भर होगा ?
८. बहुत फूल आए हैं पौधों में।
९. सूर ने एक जगह लिखा है।
१०. एक किलो गुड़ लेकर आया।
११. वे मेरे मित्र हैं।
१२. दूसरे दिन वे अपनी पीड़ा न रोक सके।

उत्तर : १. अफसर – विशेषण २. तुम – सर्वनाम
३. गांधी जी – संज्ञा ४. आँखों – संज्ञा
५. हम – सर्वनाम ६. सिरचन – संज्ञा
७. कोर्स – संज्ञा ८. बहुत – विशेषण
९. सूर – संज्ञा
१०. एक किलो – विशेषण
११. वे – सर्वनाम १२. दूसरे – विशेषण

२. अव्यय (अविकारी शब्द) (Parts of Speech)

अव्यय (अविकारी शब्द) वे शब्द हैं, जिनके रूप में लिंग, वचन और कारक के द्वारा कोई परिवर्तन नहीं आता अर्थात इनका रूप सदा एक-सा रहता है।

जैसे – यहाँ, वहाँ, और, परंतु, साथ, कारण आदि।

अव्यय (अविकारी शब्द) के चार भेद हैं :

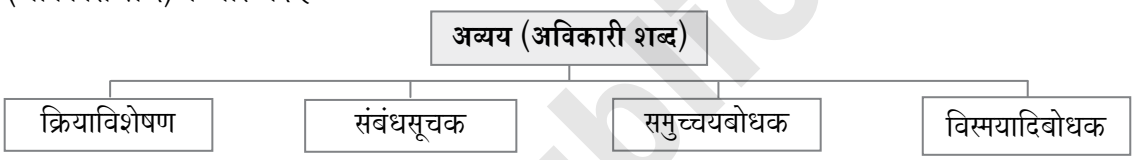

क्रियाविशेषण अव्यय (Adverb)

जो शब्द क्रिया की विशेषता बताते हैं, उन्हें **क्रियाविशेषण अव्यय** कहते हैं। यह 'विशेषता' स्थान, काल, रीति, परिमाण आदि से संबंधित होती है।

उदाहरण : इर्द-गिर्द कुछ लोग खड़े थे।

संबंधसूचक अव्यय (Preposition)

जो अव्यय संज्ञा या सर्वनाम के बाद आकर उस संज्ञा या सर्वनाम का संबंध वाक्य के दूसरे शब्दों के साथ निर्धारित करते हैं, उन्हें **संबंधसूचक अव्यय** कहते हैं।

उदाहरण : राशन के लिए कुछ रुपए रखे हैं।

समुच्चयबोधक अव्यय (Conjunction)

जो अव्यय एक वाक्य को दूसरे वाक्य से, एक शब्द-समूह को दूसरे शब्द-समूह से या एक शब्द को दूसरे शब्द से जोड़ते हैं, उन्हें **समुच्चयबोधक अव्यय** कहते हैं।

उदाहरण : अच्छा भोजन मिल गया तो समझो किस्मत।

विस्मयादिबोधक अव्यय (Interjection)

जो शब्द आनंद, भय, हर्ष, शोक, तिरस्कार, घृणा, आदि भावों को व्यक्त करते हैं, उन्हें **विस्मयादिबोधक अव्यय** कहते हैं।

उदाहरण : बेचारी ! मैं चुप नहीं रह सका।

स्वाध्याय

१. निम्नलिखित अव्यय शब्दों का वाक्यों में प्रयोग कीजिए :

१.	के बजाय	२.	इसलिए	३.	वाह !
४.	धीरे-धीरे	५.	यहाँ	६.	के पास
७.	अहा !	८.	और	९.	सचमुच !
१०.	की ओर	११.	आज	१२.	बाद

उत्तर : १. वापस जाने के बजाय वे सोचने लगे।
२. सड़क पीछे छूट गई थी इसलिए रेत पर तेजी से दौड़ रहे थे।
३. वाह ! खूब सोचा आपने।
४. उन्होंने मुझे धीरे-धीरे हिलाना शुरू किया।
५. यहाँ मत आना।
६. रवि के पास नई किताब है।
७. अहा ! कितना स्वादिष्ट आम है।
८. मैं और यश मेले में जाएँगे।
९. सचमुच ! मजा ही आ गया।
१०. घर की ओर चलो।
११. आज भाई की छुट्टी है।
१२. तुम बाद में आना।

Target Publications

Page no. 1**64** to **173** are purposely left blank.

To see complete chapter buy **Target Notes** or **Target E-Notes**

Target Publications

९ पत्र-लेखन

जीवन में पत्राचार की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। पत्र के माध्यम से हम अपना समाचार, अपनी राय, अपनी शिकायत, अपनी माँग और अपना संदेश दूसरों तक आसानी से पहुँचा सकते हैं, लेकिन पत्र लिखना भी एक कला है। पत्र लिखने वाला व्यक्ति लिखी गई सामग्री के साथ पूरी तरह से जुड़ा होता है और उससे पत्र पढ़ने वाले व्यक्ति को लेखक के व्यक्तित्व की झलक भी मिल जाती है। सामान्यत: पत्र दो प्रकार के होते हैं– **औपचारिक और अनौपचारिक।**

औपचारिक पत्र : औपचारिक पत्र उन लोगों के बीच लिखे जाते हैं, जिनके बीच औपचारिक संबंध होते हैं। इन पत्रों की भाषा-शैली और लिखने का एक खास तरीका होता है। इनकी भाषा सरल, सहज व शिष्ट होती है। इनमें निजीपन का स्थान नहीं होता और इनका रूपाकार भी सुनिश्चित होता है। औपचारिक पत्रों में कई तरह का पत्र-व्यवहार शामिल होता है, जिनमें से मुख्य हैं –

१. व्यावसायिक/माँग पत्र
२. शिकायती पत्र
३. अनुमति पत्र
४. विनती/प्रार्थना पत्र
५. आवेदन पत्र

पत्र का प्रारूप (औपचारिक पत्र)

दिनांक :

प्रति,

.....

.....

ई-मेल आईडी : .....

विषय :.....

महोदय,

विषय विवेचन :

.....

.....

भवदीय/भवदीया,

हस्ताक्षर : .....

नाम : .....

पता : .....

ई-मेल आईडी : .....

अनौपचारिक पत्र : अनौपचारिक पत्रों की रूपरेखा बँधी हुई नहीं होती। वास्तव में ये पत्र व्यक्तिगत होते हैं। इनमें भाषा-शैली का भी कोई कड़ा नियम लागू नहीं होता। इनमें आपसी बातचीत जैसा अपनापन और निजीपन होता है। ये पत्र माता-पिता, पति-पत्नी, भाई-बहन, बच्चों या मित्रों के बीच लिखे जाते हैं। अनौपचारिक पत्रों में बहुत विविधता होती है। इनमें किसी सूचना से लेकर उपदेश तक दिया जा सकता है। इनमें विषय लिखने की आवश्यकता नहीं होती है।

पत्र का प्रारूप (अनौपचारिक पत्र)

दिनांक : .....

ई-मेल आईडी : .....

संबोधन : .....

अभिवादन :.....

विषय विवेचन :

.....

.....

.....

तुम्हारा/ तुम्हारी,

हस्ताक्षर :.....

नाम : .....

पता : .....

ई-मेल आईडी : .....

टिप्पणी : पत्र-लेखन में अब तक लिफाफे पर पत्र भेजनेवाले (प्रेषक) का पता लिखने की प्रथा है। ई-मेल में लिफाफा नहीं होता है। अब पत्र में ही पता लिखना अपेक्षित है।

पत्र लिखते समय ध्यान में रखने योग्य बातें

१. **अ. दिनांक :** पत्र लिखनेवाले को पत्र के ऊपर बाईं ओर दिनांक लिखना चाहिए।

ब. पानेवाले का पता : इसके बाद व्यावसायिक पत्र में 'प्रति' और कार्यालयीन तथा आवेदन-पत्र में 'सेवा में' लिखकर, जिसे पत्र लिखना हो उसके नाम और पद का उल्लेख कर उसका पता लिखना चाहिए।

क. ई-मेल आईडी : प्राप्त करनेवाले का ई-मेल आईडी देना अनिवार्य है।

२. **विषय या संदर्भ :** इसके नीचे 'विषय' या 'संदर्भ' लिखकर पत्र लिखने का 'हेतु' संक्षेप में स्पष्ट करना चाहिए।

Target Publications

३. **पत्र का कलेवर** : संबोधन.और अभिवादन के बाद पत्र का कलेवर प्रारंभ होता है। पत्र को दो या तीन अनुच्छेदों में बाँटकर लिखना चाहिए। मुख्य विषय की चर्चा करनी चाहिए।

४. **हस्ताक्षर** : पत्र में हस्ताक्षर होना आवश्यक है। अत: यहाँ पत्र लिखनेवाले का नाम लिखा जाता है।

५. **प्रेषक का नाम** : अंत में पत्र के बाईं ओर समापन-सूचक शब्दों के साथ पत्र भेजनेवाले का नाम होना चाहिए।

६. **प्रेषक का पूरा पता** : इसके बाद पत्र भेजनेवाले का पूरा पता लिखना चाहिए। ४.

ई-मेल आईडी : पत्र के अंत में ई-मेल आईडी देना आवश्यक है।

कुछ विशेष टिप्पणी :

१. पत्र-लेखन की भाषा सरल और विषय से संबंधित होनी चाहिए।

२. पत्र में कहीं भी अस्पष्टता नहीं होनी चाहिए।

३. व्याकरण का उचित प्रयोग करें, विरामचिह्नों का प्रयोग उचित स्थानों पर करें, वर्तनी शुद्ध रखें।

४. पत्र-लेखक के व्यक्तित्व की झलक उसके लेखन में नजर आती है। अत: सदैव सम्मानसूचक शब्दों का प्रयोग करें।

पत्रों से संबंधित संबोधन, अभिवादन, समापन की तालिका

वर्ग	संबोधन	अभिवादन	समापन
बड़ों को	श्रद्धेय, माननीय, मान्यवर, परमपूज्य, पूजनीय, पूज्यवर, आदरणीय, श्रीमान, महोदय	चरणस्पर्श, सादर प्रणाम, सादर नमस्कार	आज्ञाकारी, भवदीय, विनीत, आपका कृपाभिलाषी, दर्शनाभिलाषी
मित्र को	मित्रवर, सुहृदयवर, प्रिय, प्रिय बंधु, बंधुवर	सप्रेम नमस्कार, नमस्ते, हस्तमिलन	भवदीय, आपका/तुम्हारा हितैषी
बराबर वालों को	प्रिय भाई, प्रिय बंधु, प्रिय बंधुवर, बहन	नमस्कार, नमस्ते	उत्तराभिलाषी, तुम्हारा, आपका
छोटों को	प्रिय आयुष्यमान, चिरंजीव	चिरंजीव रहो, सुखी रहो, आशीर्वाद, शुभाशीष	शुभाकांक्षी, तुम्हारा हितैषी, शुभेच्छुक, शुभचिंतक
पत्नी को	प्रिय, प्रिये, सहृदयी, प्रियतमा, स्नेही	सस्नेह	तुम्हारा, तुम्हारा ही
पति को	प्रियवर, प्रियतम, स्वामी, नाथ	नमस्ते, प्रणाम	तुम्हारी, आपकी
अपरिचितों को	महोदय, महोदया, महाशय	नमस्ते	भवदीय, भवदीया

नमूना कृतियाँ

औपचारिक पत्र

व्यावसायिक/माँग पत्र

१. **शुभम/शुभांगी, 45, गणेश नगर, जलगाँव से व्यवस्थापक, मीरा पुस्तक भंडार, नेताजी मार्ग, नासिक को हिंदी पुस्तकों की माँग करते हुए पत्र लिखता/लिखती है।** **[मार्च २०२२]**

उत्तर : २१ मार्च, २०२२

प्रति,
माननीय व्यवस्थापक जी,
मीरा पुस्तक भंडार,
नेताजी मार्ग,
नासिक।

meerabook@xyz.com

महोदय,

मैं एक विद्यार्थी हूँ और मुझे हिंदी साहित्य की पुस्तकें पढ़ने का बहुत शौक है। अत: पिछले दिनों जब मुझे कुछ नई पुस्तकें पढ़ने का मन हुआ, तब मैंने अपने क्षेत्र के पुस्तकों की दुकानों पर पूछताछ की। दुख की बात यह है कि उनके पास ये पुस्तकें नहीं थीं। एक मित्र दुकानदार ने मुझे आपके प्रकाशन का पता दिया। मुझे पूरा विश्वास है कि मुझे जिन पुस्तकों की आवश्यकता है, वे आपके पास अवश्य ही उपलब्ध होंगी। कृपया निम्नलिखित पुस्तकों को उनकी प्रति संख्या के आधार पर भेजने का कष्ट करें। पत्र के साथ ही ६०० रुपए का पोस्टल ऑर्डर भेज रहा हूँ। शेष राशि का भुगतान पुस्तकें मिलते ही तुरंत कर दिया जाएगा।

Target Publications

Page no. **167** to **203** are purposely left blank.

To see complete chapter buy **Target Notes** or **Target E-Notes**

Target Publications

नमूना कृतिपत्रिका

समय : ३ घंटे **कुल अंक : ८०**

सूचनाएँ :

१. सूचना के अनुसार गद्य, पद्य, पूरक पठन, भाषा अध्ययन (व्याकरण) की आकलन कृतियों में आवश्यकता के अनुसार आकृतियों में ही उत्तर लिखना अपेक्षित है।
२. सभी आकृतियों के लिए पेन का ही प्रयोग करें।
३. उपयोजित लेखन में पूछे गए प्रश्नों के उत्तर के लिए आकृतियों की आवश्यकता नहीं है।
४. शुद्ध, स्पष्ट एवं सुवाच्य लेखन अपेक्षित है।

विभाग १ – गद्य

२० अंक

प्र.१. (अ) पठित गद्यांश पढ़कर दी गई सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए : **[८]**

आँख खुली तो मैंने अपने-आपको एक बिस्तर पर पाया। इर्द-गिर्द कुछ परिचित-अपरिचित चेहरे खड़े थे। आँख खुलते ही उनके चेहरों पर उत्सुकता की लहर दौड़ गई। मैंने कराहते हुए पूछा– "मैं कहा हूँ?" "आप सार्वजनिक अस्पताल के प्राईवेट वार्ड में हैं। आपका ऐक्सिडेंट हो गया था। सिर्फ पैर का फ्रैक्चर हुआ है। अब घबराने की कोई बात नहीं।" एक चेहरा इतनी तेजी से जवाब देता है, लगता है मेरे होश आने तक वह इसीलिए रुका रहा। अब मैं अपनी टाँगों की ओर देखता हूँ। मेरी एक टाँग अपनी जगह पर सही-सलामत थी और दूसरी टाँग रेत की थैली के सहारे एक स्टैंड पर लटक रही थी। मेरे दिमाग में एक नये मुहावरे का जन्म हुआ। 'टाँग का टूटना' यानी सार्वजनिक अस्पताल में कुछ दिन रहना। सार्वजनिक अस्पताल का खयाल आते ही मैं काँप उठा। अस्पताल वैसे ही एक खतरनाक शब्द होता है, फिर यदि उसके साथ सार्वजनिक शब्द चिपका हो तो समझो आत्मा से परमात्मा के मिलन होने का समय आ गया। अब मुझे यूँ लगा कि मेरी टाँग टूटना मात्र एक घटना है और सार्वजनिक अस्पताल में भरती होना दुर्घटना।

१. संजाल पूर्ण कीजिए : **(२)**

लेखक के पूछने पर एक चेहरे ने यह जवाब दिया

२. i. आकृति पूर्ण कीजिए : **(१)**

बिस्तर के इर्द-गिर्द ऐसे चेहरे खड़े थे

ii. ऐसा प्रश्न तैयार कीजिए जिसका उत्तर निम्नलिखित शब्द हो : **(१)**

अस्पताल

३. i. निम्नलिखित शब्दों के समानार्थी शब्द लिखिए : **(१)**

१. आँख – _____ २. परमात्मा – _____

ii. निम्नलिखित शब्दों में उपसर्ग जोड़कर नए शब्द बनाइए : **(१)**

१. दिन – _____ २. समय – _____

४. 'दुर्घटना का कारण : लापरवाही या संयोग', इस विषय पर आठ से दस वाक्य लिखिए। **(२)**

Target Publications

प्र.१. (आ) पठित गद्यांश पढ़कर दी गई सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए : **[८]**

जवाब दिया– "हाँ, बाबू जी! एक जगह खाने पर चले गए थे।" उन्होंने आगे प्रश्न किया– "लेकिन खाने पर गए तो कैसे? जब मैं आया तो फिएट गाड़ी गेट पर खड़ी थी। गए कैसे?"
कहना पड़ा– "हम इंपाला शेवरलेट लेकर गए थे।"
बोले–"ओह हो, तो आप लोगों को बड़ी गाड़ी चलाने का शौक है।"
बाबू जी खुद इंपाला का प्रयोग न के बराबर करते थे और वह किसी 'स्टेट गेस्ट' के आने पर ही निकलती थी। उनकी बात सुन मैंने अनिल भैया की तरफ देख आँख से इशारा किया। मैं समझ गया था कि यह इशारा इजाजत का है। अब हम उसका आए दिन प्रयोग कर सकेंगे।
चाय खत्म कर उन्होंने कहा– "सुनील, जरा ड्राइवर को बुला दीजिए।"
मैं ड्राइवर को बुला लाया। उससे उन्होंने पूछा– "तुम लॉग बुक रखते हो न?"
उसने 'हाँ' में उत्तर दिया। उन्होंने आगे कहा– "एंट्री करते हो?"
"कल कितनी गाड़ी इन लोगों ने चलाई?"
वह बोला– "चौदह किलोमीटर।"
उन्होंने हिदायत दी– "उसमें लिख दो, चौदह **किलोमीटर** निजी उपयोग।"

१. i. **आकृति पूर्ण कीजिए :** **(१)**

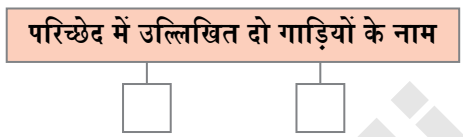

ii. **आकृति पूर्ण कीजिए :** **(१)**

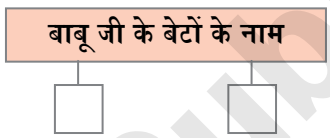

२. **घटनानुसार उचित क्रम लगाकर वाक्य फिर से लिखिए :** **(२)**

१. अब हम उसका आए दिन प्रयोग कर सकेंगे।
२. एक जगह खाने पर चले गए थे।
३. चौदह किलोमीटर निजी उपयोग।
४. वह किसी 'स्टेट गेस्ट' के आने पर ही निकलती थी।

३. i. **परिच्छेद में आई विलोम शब्द की जोड़ी ढूँढ़कर लिखिए :** **(१)**

ii. **निम्नलिखित शब्दों से तद्धित और कृदंत बनाकर लिखिए :** **(१)**

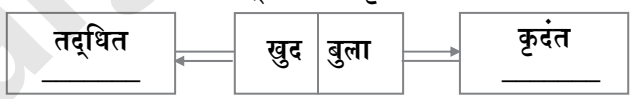

४. **'जीवन में अनुशासन का महत्त्व', इस विषय पर अपने विचार लिखिए।** **(२)**

प्र.१. (इ) अपठित गद्यांश पढ़कर सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए : **[४]**

सेल फोन को थोड़े ही समय में अपार लोकप्रियता मिलने का कारण उसकी उपयोगिता है। दूरियाँ मिटाने के साथ-साथ इसने दैनिक जीवन को सुविधाजनक भी बनाया है। अधिकारियों और कर्मचारियों के बीच निरंतर संपर्क बना रहता है। संकट के समय परिवार और मित्रों की सहायता पाना आसान हो गया है। तकनीकी उन्नति ने एक ओर तो सुविधाओं में वृद्धि की, दूसरी ओर उपकरण की कीमतों और शुल्क दरों में निरंतर कमी होती रही। कमी की यह प्रक्रिया जारी है। शुरुआती दौर में २० से २५ हजार रुपयों में ये उपकरण बिकते थे। अब उनसे अधिक सुविधाओं वाले उपकरण एक हजार रुपए में भी आसानी से मिल जाते हैं। एक अनुमान के अनुसार अगले दो-तीन वर्षों में कीमतें घट कर पाँच सौ रुपए तक पहुँच सकती हैं। विज्ञान के इस

Target Publications

Page no. 20**6** to **210** are purposely left blank.

To see complete chapter buy **Target Notes** or **Target E-Notes**

Target Publications

बोर्ड कृतिपत्रिका : मार्च 2023

समय : 3 घंटे **कुल अंक : 80**

सूचनाएँ :

1. सूचनाओं के अनुसार गद्य, पद्य, पूरक पठन तथा भाषा अध्ययन (व्याकरण) की आकलन कृतियों में आवश्यकता के अनुसार आकृतियों में ही उत्तर लिखना अपेक्षित है।
2. सभी आकृतियों के लिए पेन का ही प्रयोग कीजिए।
3. रचना विभाग में पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखने के लिए आकृतियों की आवश्यकता नहीं है।
4. शुद्ध, स्पष्ट एवं सुवाच्य लेखन अपेक्षित है।

विभाग 1 – गद्य : 20 अंक

1. (अ) निम्नलिखित पठित गद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए : **[8]**

सबसे पहले हम अंजुना बीच पहुँचे। गोवा में छोटे-बड़े करीब ४० बीच हैं लेकिन प्रमुख सात या आठ ही हैं। अंजुना बीच नीले पानीवाला, पथरीला बहुत ही खूबसूरत है। इसके एक ओर लंबी सी-पहाड़ी है, जहाँ से बीच का मनोरम दृश्य देखा जा सकता है। समुद्र तक जाने के लिए थोड़ा नीचे उतरना पड़ता है। नीला पानी काले पत्थरों पर पछाड़ खाता रहता है। पानी ने काट-काटकर इन पत्थरों में कई छेद कर दिए हैं जिससे ये पत्थर कमजोर भी हो गए हैं। साथ ही समुद्र के काफी पीछे हट जाने से पत्थरों के बीच में पानी भर गया है। इससे वहाँ काई ने अपना घर बना लिया है। फिसलने का डर हमेशा लगा रहता है लेकिन संघर्षों में ही जीवन है, इसलिए यहाँ घूमने का भी अपना अलग आनंद है। यहाँ युवाओं का दल तो अपनी मस्ती में डूबा रहता है, लेकिन परिवार के साथ आए पर्यटकों का ध्यान अपने बच्चों को खतरों से सावधान रहने के दिशानिर्देश देने में ही लगा रहता है। मैंने देखा कि समुद्र किनारा होते हुए भी बेनालिया बीच तथा अंजुना बीच का अपना-अपना सौंदर्य है। बेनालियम बीच रेतीला तथा उथला है। यह मछुआरों की पहली पसंद है।

(1) विशेषताएँ लिखिए : **[2]**

(i) अंजुना बीच → ☐ ☐

(ii) बेनालियम बीच → ☐ ☐

(2) **एक-दो** शब्दों में उत्तर लिखिए : **[2]**

(i) गोवा के छोटे-बड़े बीच की संख्या .....

(ii) काई ने यहाँ घर बना लिया था .....

(iii) अपने बच्चों को खतरों से सावधान कराने वाले .....

(iv) बेनालियम बीच इनकी पहली पसंद है .....

Target Publications

(3) (i) निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द गद्यांश से ढूँढ़कर लिखिए : **[1]**

(1) बदसूरत × .....

(2) नापसंद × .....

(ii) निम्नलिखित शब्दों के लिए पर्यायवाची शब्द लिखिए : **[1]**

(1) कमजोर – .....

(2) आनंद – .....

(4) अपने द्वारा किए हुए पर्यटन का एक अनुभव 25 से 30 शब्दों में लिखिए। **[2]**

(आ) निम्नलिखित पठित गद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए : [8]

आम तौर से माना जाता है कि रुपया, नोट या सोना-चाँदी का सिक्का ही संपत्ति है, लेकिन यह ख्याल गलत है क्योंकि ये तो संपत्ति के माप-तौल के साधन मात्र हैं। संपत्ति तो वे ही चीजें हो सकती हैं जो किसी-न-किसी रूप में मनुष्य के उपयोग में आती हैं। उनमें से कुछ ऐसी हैं जिनके बिना मनुष्य जिंदा नहीं रह सकता एवं कुछ, सुख-सुविधा और आराम के लिए होती हैं। अन्न, वस्त्र और मकान मनुष्य की प्राथमिक आवश्यकताएँ हैं जिनके बिना उसकी गुजर-बसर नहीं हो सकती। इनके अलावा दूसरी अनेक चीजें हैं जिनके बिना मनुष्य रह सकता है।

प्रश्न उठता है कि संपत्तिरूपी ये सब चीजें बनती कैसे हैं? सृष्टि में जो नानाविध द्रव्य तथा प्राकृतिक साधन हैं, उनको लेकर मनुष्य शरीर श्रम करता है, तब यह काम की चीजें बनती हैं। अत: संपत्ति के मुख्य साधन दो हैं : सृष्टि के द्रव्य और मनुष्य का शरीर श्रम। यंत्र से कुछ चीजें बनती दिखती हैं पर वे यंत्र भी शरीर श्रम से बनते हैं और उनको चलाने में भी प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष शरीर श्रम की आवश्यकता होती है। केवल बौद्धिक श्रम से कोई उपयोग की चीज नहीं बन सकती अर्थात बिना शरीर श्रम के संपत्ति का निर्माण नहीं हो सकता।

(1) आकृति में दिए गए शब्दों का सूचना के अनुसार वर्गीकरण कीजिए : **[2]**

रुपया, सृष्टि के द्रव्य, वस्त्र, मनुष्य का शरीर श्रम, अन्न, मकान

संपत्ति के मुख्य साधन
(1) .....
(2) .....

मनुष्य की प्राथमिक आवश्यकता
(1) .....
(2) .....

(2) उत्तर लिखिए : **[2]**

गद्यांश में उल्लेखित ख्याल	ख्याल गलत होने का कारण
_____	_____

(3) सूचनाओं के अनुसार कृति पूर्ण कीजिए : **[2]**

(i) गद्यांश में प्रयुक्त शब्दयुग्म लिखिए :

(1) .....

(2) .....

(ii) वचन परिवर्तन करके वाक्य फिर से लिखिए :
चीजें बनती दिखती हैं।

(4) 'शारीरिक श्रम का महत्त्व' इस विषय पर 25 से 30 शब्दों में अपने विचार लिखिए। **[2]**

Target Publications

(आ) (1) **वृत्तांत लेखन :** **[5]**

युनियन हायस्कूल मुंबई में मनाए गए 'वृक्षारोपण समारोह' का 60 से 80 शब्दों में वृत्तांत लेखन कीजिए।

(वृत्तांत में स्थल, काल, घटना का उल्लेख होना अनिवार्य है।)

अथवा

कहानी लेखन :

निम्नलिखित मुद्दों के आधार पर 70 से 80 शब्दों में कहानी लिखकर उसे उचित शीर्षक दीजिए तथा सीख लिखिए :

एक गाँव – पीने के पानी की समस्या – दूर-दूर से पानी लाना – सभी परेशान – सभा का आयोजन – मिलकर श्रमदान का निर्णय – दूसरे दिन से केवल एक आदमी का काम में जुटना – धीरे-धीरे एक-एक का आना – सारा गाँव श्रमदान में – तालाब की खुदाई – बरसात के दिनों जमकर बारिश – तालाब का भरना – सीख।

(2) **विज्ञापन लेखन :** **[5]**

निम्नलिखित जानकारी के आधार पर 50 से 60 शब्दों में विज्ञापन तैयार कीजिए :

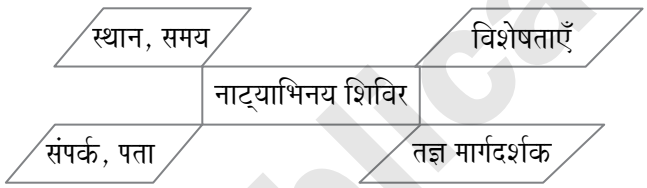

(इ) **निबंध लेखन :** **[7]**

निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर 80 से 100 शब्दों में निबंध लिखिए :

(1) एक किसान की आत्मकथा
(2) मेरा प्रिय खेल
(3) पुस्तक प्रदर्शनी में एक घंटा

Target Publications

मार्च 2023 की बोर्ड कृतिपत्रिका की उत्तरपत्रिका देखने हेतु दिए गए Q. R. Code को *Quill - The Padhai App* द्वारा स्कैन करें।

AVAILABLE NOTES FOR STD. X:
(Eng., Mar. & Semi Eng. Medium)

PERFECT SERIES
- English Kumarbharati
- मराठी अक्षरभारती
- हिंदी लोकभारती
- हिंदी लोकवाणी
- आमोद: सम्पूर्ण-संस्कृतम्
- आनन्द: संयुक्त-संस्कृतम्
- History and Political Science
- Geography
- Mathematics (Part - I)
- Mathematics (Part - II)
- Science and Technology (Part - 1)
- Science and Technology (Part - 2)

PRECISE SERIES
- Science and Technology (Part - 1)
- Science and Technology (Part - 2)
- History, Political Science and Geography

PRECISE SERIES
- My English Coursebook
- मराठी कुमारभारती
- इतिहास व राज्यशास्त्र
- भूगोल
- गणित (भाग - I)
- गणित (भाग - II)
- विज्ञान आणि तंत्रज्ञान (भाग - १)
- विज्ञान आणि तंत्रज्ञान (भाग - २)

WORKBOOK
- English Kumarbharati
- मराठी अक्षरभारती
- हिंदी लोकभारती
- My English Coursebook
- मराठी कुमारभारती

Additional Titles: (Eng., Mar. & Semi Eng. Med.)
- Grammar & Writing Skills Books (Std. X)
  • Marathi • Hindi • English
- Hindi Grammar Worksheets
- SSC 54 Question Papers & Activity Sheets With Solutions
- आमोद:(सम्पूर्ण-संस्कृतम्) SSC 11 Activity Sheets With Solutions
- हिंदी लोकवाणी (संयुक्त), संस्कृत-आनन्द: (संयुक्तम्) SSC 12 Activity Sheets With Solutions
- IQB (Important Question Bank)
- Mathematics Challenging Questions
- Geography Map & Graph Practice Book
- A Collection of Board Questions With Solutions

Scan the QR code to buy e-book version of Target's Notes on Quill - The Padhai App

Visit Our Website

Target Publications® Pvt. Ltd.
Transforming lives through learning.

Address:
2nd floor, Aroto Industrial Premises CHS,
Above Surya Eye Hospital, 63-A, P. K. Road,
Mulund (W), Mumbai 400 080
Tel: 88799 39712 / 13 / 14 / 15
Website: www.targetpublications.org
Email: mail@targetpublications.org

Explore our range of STATIONERY